

मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया

मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया,
जो तू वृथा गवाए तो मैं क्या करूँ.....

मूल वेदो का सब कुछ बता ही दिया,
अब समझ में ना आये तो मैं क्या करूँ,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

अन्न दूध आदि खाने को सब कुछ दिया,
मेवा मिष्ठान भी मैंने पैदा किया,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

फिर भी निर्दयी हो जीवो को सताने लगा,
मांस मदिरा ही खाये तो मैं क्या करूँ,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

दीन दुखियो के दिल के दुखाने लगा,
रात दिन पाप में मन लगाने लगा,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

तूने जैसा किया वैसा पाने लगा,
अब तू आंसू बहाये तो मैं क्या करूँ,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

नाम हरी का तेरा पाप भी काट दे,
जो तू पाप करने से मन डाँट दे,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

मैं चाहता हूँ आज तू हरी की शरण,
अब तू ही न आये तो मैं क्या करूँ,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

छोड़ कर चल कपट आज तू हरी की शरण,
कट जाये सहज तेरा आवागमन,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

जो कोई ना मानेगा हरी के वचन,
यही चक्कर लगाए तो मैं क्या करूँ,
मैंने मानुष जनम तुझको हीरा दिया.....

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |